SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मृदुला सिंहा के अतिशय उपन्यास में चित्रित भारतीय नारी

हरिणी रानी आगर, Ph.D., हिंदी विभाग
लक्षेश्वरी, शोधार्थी, हिंदी विभाग
शासकीय बिलासा कन्या पी. जी. महाविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
हरिणी रानी आगर, Ph.D.
लक्षेश्वरी

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 30/10/2023
Revised on : -----
Accepted on : 06/11/2023
Plagiarism : 04% on 30/10/2023

शोध सार

मृदुला सिंहा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की आधुनिक कथा लेखिका हैं। इनका साहित्य धार्मिक मूल्य बोध की दृष्टि से साहित्य जगत में एक अलग ही पहचान रखता है। उन्होंने पौराणिक नारी पात्रों को केन्द्र में रखकर आत्मकथात्मक उपन्यासों की रचना की हैं। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, भारतीय लोक संस्कृति की झलक स्पष्ट रुप से उनकी साहित्य में झलता है। पौराणिक नारी पात्रों को आधुनिक रुप में चित्रित करने का सफल प्रयास लेखिका ने किया है जिससे आधुनिक जगत की नारियों को आत्मविष्वास और संबल प्राप्त हो सके। लेखिका लोक कथाओं एवं धार्मिक ग्रन्थों के माध्यम से अपनी विचारों एवं भावनाओं को रचनाओं में व्यक्त किया है। सनातन समाज के जीवन मूल्यों को भारतीय शैली में और नारी के पारिवारिक आदर्ष को आधुनिक समाज में स्थापित करने का सफल प्रयास किया है। मृदुला सिन्हा ने अपनी रचनाओं में सामाजिक मूल्य बोध के अर्न्तगत नारी अस्तित्व एवं अस्मिता को भारतीय परिवेश में गढ़ा है। अतिशय उपन्यास में लेखिका ने नारी के उदात्त भाव, प्रेम, त्याग एवं सर्मपण की भावना को आदर्श रुप में प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द

मृदुला सिन्हा, अतिशय, आधुनिक भारतीय नारी, पौराणिक कथाएं, नारी विमर्श.

मृदुला सिंहा भारतीय जीवन मूल्यों की प्रखर प्रवक्ता, पूर्व राज्यपाल (प्रथम महिला राज्यपाल– गोवा) एवं साहित्यकर थे। उनके विचार भारतीय चिंतन परम्परा से लबरेज है। उन्होंने अपनी रचनाओं में आधुनिकता बोध, जीवन दर्शन एवं आदर्श, सामाजिक विसंगतियों, मानवीय मूल्यों का विघटन और भारतीयता के पक्ष को

व्यक्त किया है। पौराणिक स्त्री पात्रोंको आदर्श मानकर लेखिका ने अपनी रचनाओं का केन्द्र बिन्दू बनाया है। जैसे– 'ज्यों मेहंदी को रंग', 'घरवास', 'अतिशय', 'सीता पुनि बोली', 'विजयिनी', 'परितप्त लंकेश्वरी', और 'अहल्या उवाच' आदि उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। इन उपन्यासों में लेखिका ने पौराणिक नारी पात्रों के चरित्र को आधुनिक संदर्भों में चित्रित किया है। मृदुला सिंहा मानवीय और भारतीय मूल्यों को एक साथ रखकर स्त्री–विमर्श को देखने की बात करती हैं, क्योंकि वे भारतीय मूल्यों की प्रखर वक्ता थे।

अतिशय उपन्यास में लेखिका द्वारा पौराणिक कथा के पात्रों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रखकर रचा गया है जिसमें एक आधुनिक समाज की कथा को प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास भोग बनाम संयम व मानवीय कथा मूल्यों, पौराणिक नारी चरित्रों को स्थापित करता है। उपन्यास की कथावस्तु पौराणिक है जिसे लेखिका ने आधुनिक रुप देकर नारी वर्ग के ममतत्व, त्याग, सर्मपण की भावनाओं को नारी के अस्त्वि व अस्मिता के लिए एक हथियार के रुप में चित्रित किया है। मृदुला सिन्हा के द्वारा भारतीय नारी के जीवन शक्ति को आधुनिक रुप में पुर्नस्थापित करने के संबंध में रविन्द्र नाथ मिश्र कहते हैं कि– ''आपने पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथापात्रों को लोकभूमि से जोड़कर उनमें कल्पना के द्वारा नवीन भावबोधों की कलात्मक सृष्टि की है।''[1] उपन्यास के कथावस्तु को यदि हम पौराणिक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं तो वचनदेव त्रिपाठी, महर्षि शुक्रचार्य की चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है, शिवानी (वचनदेव त्रिपाठी) की पुत्री है जो देवयानी की चरित्र की स्मृति कराती है, बृहस्पति के पुत्र की चरित्र की प्रतिबिम्ब में रजनीश और नहुश पुत्र ययाति की चरित्र की प्रतिबिम्ब में यतींद्र गोयनका उर्फ यति, यति और उसकी प्रेमिका शर्मिष्ठा के पुत्रपुरुषार्थ के चरित्र प्रतिबिम्ब के रुप में है। ययाति (पौराणिक पात्र) के कामलोलुपता और भोगवादी प्रवृत्ति को लेखिका ने आधुनिक समाज में प्रत्येक स्तर पर आ रहे गिरावट के संदर्भ को यति के माध्यम से चित्रित किया है। परंपरागत मूल्य विघटन हो रहे है जिसका शिकार नारी भी हो रही है। उपन्यास की भूमिका में स्वयं लेखिका ने कहा है कि– ''अतिशय की कथा के माध्यम से मैंने सनातन समाज के शाश्वत जीवनमूल्यों को आधुनिकतम रुप में तलाशने का प्रयास किया है।''[2] उपन्यास में लेखिका ने तीन पीढ़ियों की पारिवारिक एवं आर्थिक संघर्षों और नारी के प्रेम, त्याग एवं समर्पणकी भावना को चित्रित किया है। आधुनिक नारी को आत्मविश्वास एवं संबल प्रदान करने के लिए ही भारतीय चिंतन परम्परा को ध्यान में रखकर शिवानी जैसे पात्र की रचना की हैं। अतिशय उपन्यास के संबंध में लेखिका कहतीं हैं कि–''आधुनिक संदर्भों में ही इन्हीं पात्रों के माध्यम से उन चिरंतन प्रश्नों के उत्तर ढूंढने का प्रयास जितना दुरुह व कष्टसाध्य था मेरे लेखक मन के लिए उतना ही काम्य था।... फिर ये पात्र न जाने कैसे गुपचुप–गुपचुप महाभारत के पन्नों से फिसलकर मेरे आसपास–नए शरीर व परिचय लिए एक के बाद एक उपस्थित होते गए, परंतु मेरा लेखन मन तो इन्हें इनके महाभारत युगीन नामों से ही पहचान पाया। अतएव मैंने इन्हें इनके वास्तविक अथवा मिलते नाम से ही पुकारा है।''[3] उपन्यास की रचना लेखिका ने आधुनिक नारी को आत्म संबल प्रदान करने के उद्देश्य को लेकर पौराणिक पात्रों को आधुनिक रुप में गढ़ा है।

उपन्यास का मुख्यपात्र यतींद्र गोयनका कामलोलुप प्रवृति का है उसकी भोग की भावना संयमित ही नहीं होती है जिसके कारण वह अपने परिवार, कर्तव्य, जवाबदारी एवं व्यवसाय के प्रति लापारवाही करता है। यतींद्र गोयनका अपने पुत्र के जन्म दिन के अवसर पर भी मेहमानों के बीच ही शिवानी से कामक्रीडा के लिए अनुनय–विनय करता है जिससे शिवानी कहती है–''यहां भी अति हो रही है।''[4] यती एक बच्चे का पिता होने के बावजूद भी स्वयं पर नियंत्रण नही कर पाता है और सोनिया, शर्मिष्ठा एवं अनगिनत महिलाओं के साथ संबंध बनाता है और अपनी पत्नी शिवानी को धोखा देता है। वर्तमान समय में भी पुरुष अपने स्वार्थपूर्ति, अहम् एवं काम भावना की तुष्टि के लिए स्त्री को धोखा देने लगते हैं। शिवानी को पति द्वारा दिये जाने वाले धोखे के बारे में स्वयं लेखिका कहती हैं कि–''स्त्री चाहे मां के रुप में हो अथवा पत्नी के या फिर बेटी के, उसे पुरुश को समझते देर नहीं लगती।''[5] यहां पर लेखिका ने नारी के मनोगत भावों को शिवानी के माध्यम से व्यक्त किया है। शिवानीपति द्वारा दिये जाने वाले धोखे से घबराती नहीं है और अपने काम वासना के प्रति असंयमित रहने के कारण बीमारग्रस्त हो गये यति को जीवन में धैर्य, सयंम एवं त्याग की भावना सिखाकर सही दिशा में लाने और डूबते हुए अपने खानदानी व्यवसाय को फिर से ऊंचाई के शिखर पर पहुंचाने के लिए प्रेम, त्याग, तपस्या एवं समर्पण कर कठिन से भी कठिन संघर्ष करने का निर्णय लेती

है। शिवानी अपने जीवन में आई कठिनाईयों एवं चुनौतियों से घबरा कर नहीं भागती, बल्कि डटकर सामना करती है। लेखिका कहती हैं कि नारी जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान हमारी भारतीय जीवन एवं संस्कृति में है। इस विशय में डॉ. बद्री प्रसाद पंचोली कहतें हैं कि–''आयुष्मती मृदुला सिंहा का...जिसे लेखिका ने मर्मस्पर्शी और संवेदनशील लेखनी से भारतीय नारियों के लिए आदर्श स्वरुप प्रस्तुत किया है। लेखिका ने जिस उद्देश्य दृष्टि को लेकर यह उपन्यास लिखा है कामना है कि लेखिका उस उद्देश्य में सफल हो''[6] लेखिका ने पुरातन एवं आधुनिकता के मध्य सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है।

भारतीय सामाजिक परिवार संरचना में नारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दाम्पत्य जीवन एक निधि के रुप में होता हैं और अपने परिवार को सहेज कर रखने का कर्तव्य पति पत्नी दोनों का है। भारतीय समाज में नारी की पहचान परिवार की एक विशेष धूरी के रुप में होती है, क्योंकि समाज में नारी का महत्वपूर्ण स्थान आदि काल से ही चला आ रहा है। परिवार व्यवस्था में नारी को ज्यादा त्याग और समर्पण करने की आवश्यकता होती है। लेखिका कहती हैं कि ''पुरुष को संतुष्ट करना एक स्त्री का कर्तव्य ही नहीं उसकी जीत भी है। पति के आगे पूर्ण सर्मपण नारी की हार नहीं, जीत है। जीतना सीखो, स्वयं को हार कर पुरुश को जीतना।''[7] शिवानी का चरित्र नारी के पतिव्रत धर्म को मजबूती प्रदान करता है, क्योंकि शिवानी अपने कामलोलुप पति यति और शर्मिष्ठा (प्रेमिका) के साथ शारीरिक संबंध बनना और संतान के जन्म देने की गलती, अपराधों एवं भूलों को क्षमा कर देती है–''शिवानी ने यति को क्षमा करके हरि का क्षमा दान भी छोटा कर दिया। विष्णु ने भृगु द्वारा लात खाकर भी उसे क्षमा कर दिया था। बड़े क्षमादानी कहलाए, परंतु यति के शिवानी के प्रति किए गए अपराध की तुलना भृगु के अपराध से नहीं की जा सकती। यति का अपराध उस अपराध से अधिक संगीन था। शिवानी ने क्षमादान दे दिया। एक साधारण स्त्री ने इतना बड़ा असाधारण कार्य कर दिखाया। यही नारी का रुप है...।''[8] लेखिका का मानना है कि नारी सशक्तिकरण को हमें परिवार सशक्तिकरण के रुप में भी देखना चाहिए, क्योंकि परिवार के केन्द्र में नारी ही होती है। शिवानी भारतीय नारी चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है, इसलिए नारी के त्याग एवं समर्पण की भावना के कारण भारतीय परम्परा में दाम्पत्य बोध का सौन्दर्य दिखाई देता है। शिवानी के क्षमा भाव, त्याग एवं समर्पण की भावना को ही लेखिका ने एक आदर्श नारी के विशेष गुण के रुप में प्रस्तुत करते हुए भारतीय नारी के विषय में स्वयं कहती हैं कि–''सावित्री हमारा इतिहास है। भारतीय नारी की तेजस्विता का इतिहास। नारी विकास की दशा निर्धारण के समय तो और भी आवश्यक है, सावित्री की निर्णय स्वतंत्रता के पहलुओं को जानना समझना और आत्मसात करना।''[9] मृदुला जी ने पौराणिक कथाओं के स्त्री पात्रों के चरित्र को सामने रखकर स्त्री अस्मिता को प्राचीन एवं आधुनिक जीवन शैली के मध्य तारत्मय स्थापित करने का प्रयास किया है और नारी विमर्श का भारतीय चिंतन परम्परा को व्यक्त किया है।

मृदुला जी नारी की समपूर्णता उसके माँ बनने में मानती है, क्योंकि नारी प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष को ऊर्जा, प्रेरणा, संतुष्टि, भावनात्मक संवेगों को पहचानने वाली और जीवन का पथ प्रशस्त करने वाली नारी अपने मातृत्व से ही सृष्टि का निर्माण कर पुरुष से श्रेष्ठ कहलाती है। उपन्यास में लेखिका स्वयं कहती है कि–''नारी की पूर्णता माँ बनने में है।'' स्त्री पुरुष के मिलन में भी नारी ही त्याग व सर्मपण की मार्ग प्रदर्शक बन सकती है। प्रकृति ने सृजन और संवरण का कार्यभार देकर पुरुश से बहुत ऊंचा दर्जा उन्हें दे रखा है।''[10] लेखिका का मानना है कि नारी को प्रकृति से ही विशेष ऊर्जा और शक्ति प्राप्त होती है, क्योंकि नारी प्रकृति प्रदत्त भावों से ही ममत्व शालिनी होती है। उनका मानना है कि वर्तमान समय में नारी को पुरुष के समान बनने या उसके जैसे गंभीर होने की आवश्यकता नहीं है बल्कि नारी को अपनेमातृत्व से महिमा मंडित होने की जरुरत है। लेखिका नारी के मातृत्व के बारे हिन्दी अकादमी द्वारा आयोजित संगोष्ठी में कहती हैं कि–''आज स्त्रियों को पुरुष के समान बनने की जगह नारीत्व से पूर्ण बनने की जरुरत है। नारी, नारी होती है और पुरुष, पुरुष। नारी कभी भी पुरुष के समान हो ही नही सकती। वह तो पुरुष से भी श्रेष्ठ है, क्योंकि वह दातृ है।''[11] भारतीय संस्कृति के अनुसार मातृत्व का गुण ही नारी जीवन की सच्ची सार्थकता है ऐसा लेखिका मानती है इसलिए उन्होंने अपनी रचनात्मक चेतना में भारतीय नारी को माँ, बहन, बेटी पत्नी, आदि संबंधों के रुप में चित्रित किया है। भारतीय समाज और परम्परा के अनुसार नारी सम्पूर्ण सृष्टि की जननी

है इसलिए नारी को समस्त संसार की माता कहा जाता है इस संदर्भ में महादेवी वर्मा लिखती हैं कि–''स्त्री के विकास की चरम सीमा उसके मातृत्व में हो सकती है.... प्रकृति ने केवल उसके शरीर को ही सुकुमार नहीं बनाया, वरन् उसे मनुष्य की जननी का पद दे कर, उसके हृदय में अधिक संवेदना, आँखों में अधिक आर्द्रता तथा स्वभाव में अधिक कोमलता भर दी।''[12]

मृदुला सिंहा की नारी पात्र शिक्षित, जागरुक व अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की पहचान बनाये रखने के लिए निरंतर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ना जानती हैं। शिवानी, शर्मिष्ठा और रमी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बनाये रखने के लिए निरंतर संघर्षरत हैं। वहीं रमी अपनी पुत्री सोनिया को प्रेम में मिले धोखे के कारण खो कर भी यति को क्षमा कर देती है और शर्मिष्ठा एवं यति के संतान को अपनी संतान की तरह पालती है। शिवानी अपने डूबते हुए मिल जिसका नाम शिवानी गारमेंट्स है उसे मीनाक्षी, अंबिका, कल्पना और कार्तिका ये सभी की सहयोग से ऊंचाई के शिखर पर पहुँचा देती है–''शिवानी गारमेंट्स ने अंतरराष्ट्रीय जगत् में तहलका मचा दिया था। मिल के लिए देश–विदेश से ऑर्डर आ रहे थे। ऑर्डर पूर्ति करने के लिए तिगुने कर्मचारियों और मजदूरों की आवष्यकता पड़ गई थी।''[13] शिवानी अपने त्याग, तप–तपस्या, लगन एवं मेहनत से अपने उद्देश्य को पूरा करती है। नारी की आत्मनिर्भरता और स्वालंबी स्थिति उसके जीवन के आधुनिक मूल्यों को मजबूती प्रदान करती है।

लेखिका के नारी पात्र प्रेमी व पति को अपने रुप सौंदर्य के द्वारा मोहित करने वाली मोहिनी नहीं है बल्कि अन्याय, अत्याचार के मार्ग से और बुरे कर्मों के चक्रव्यूह से निकाल कर एक नवीन जीवन के लिए मार्गदर्शन करने का भी कार्य करती है। नारी के क्षमाशील गुण ही उसे सतीत्व, पत्नीत्व, नारी धर्म से विभूषित कर उसके अस्मिता को गौरवमयी रुप प्रदान करता है। ''भारतीय नारियों में कोमलता, भोलापन, लचीलापन और साथ–साथ एक ठसक होती है और इन सबसे ऊपर होता है उनका स्त्रीत्व, जिसकी मिसाल नहीं। त्याग, तपस्या, सहिष्णुता, गुणग्राहकता कोई उनसे सीखे।''[14] नारी का यही चरित्र भारतीय नारी के स्वरुप को गरिमा, भव्यता एवं उदात्तता प्रदान करता है। नारी की संवेदना में इन्द्रधनुषी रंग हैं जिसे मृदुला सिंहा बेहतरीन तरीके से पिरोना जानती हैं। लेखिका ने भारतीय नारी के इसी इन्द्रधनुशी स्वरुप को इस उपन्यास में शिवानी के माध्यम से उकेरा है। भारतीय समाज में नारी अस्मिता को नारी को संबोधित किये जाने वाले रिश्ते नातों में भी देखा जा सकता है इसलिए मृदुला सिंहा कहती हैं कि–''आशा करती हूँ कि हमारी बेटी पोतियों की आने वाली पीढ़ियाँ अपने अन्दर सती सावित्री के जीवन अंशों को धारण करेंगी। सभी युगों में सावित्री अत्याधुनिक रहेगी।''[15] उनका मानना है कि वर्तमान समय में सावित्री और सीता ही भारतीय नारियों के लिए आदर्श है। भारतीय नारी के जीवन संघर्श और उसकी अस्मिता के भी दर्शन कराया है। लेखिका भारतीय संस्कृति एवं परम्परा में निहित नारी अस्मिता के समस्त बिन्दूओं को ध्यान में रखकर स्त्री की महत्ता को बरकरार रखने की बातें कहती हैं।

निष्कर्ष

मृदुला सिंहा भारतीय जीवन मूल्यों की प्रखर प्रवक्ता अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी चेतना पर चर्चा करते हुए कहती हैं कि नारी मात्र देह नहीं है अपितु वह मानवीय है। अतिशय उपन्यास में लेखिका ने भारतीय नारी के आत्मस्वाभिमान, स्वालंबन, आत्मशक्ति, आत्मचेतना एवं अस्मिता की पहचान को शिवानी के माध्यम से व्यक्त किया है। लोक जीवन एवं भारतीयता से उपजी हुई कथाएँ ही मृदुला सिन्हा के लेखन की विशेशताएँ हैं। जीवन जीने के लिए लोक विश्वास ही मानव समुदाय में आस्था का भाव उत्पन्न करता है। भारतीय नारी को पौराणिक चेतना से समृद्ध करने का भरसक प्रयास किया है और पौराणिक कथाओं का आधार ग्रहण कर शिवानी के माध्यम से नारी के आत्म स्वाभिमानी रुप को गढ़ा है। भारतीय चिंतन परम्परा को ध्यान में रखकर अपने नारी पात्रों का चुनाव लेखिका बडे ही सादगी के साथ करती हैं। लेखिका कहती है कि नारी सशक्तिकरण की नींव भारत भूमि में ही खोजी जा सकती है। पौराणिक नारी पात्रों जैसे सती सावित्री, सती अनुसुईया, माता सीता, मंदोदरी आदि के आत्म स्वाभिमान, आत्म संबल और चारित्रिक शौर्य को लेखिका ने आधुनिक रुप में अपनी रचनाओं में भारतीय नारी के

अस्तित्व व अस्मिता को पहचान दिलाने के रुप में किया है। लेखिका मृदुला सिन्हा जी ने भारतीयता के नींव पर स्त्री विमर्श को एक मजबूती प्रदान करती हैं। पौराणिक नारी पात्रों की आत्मचरित्रों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गढ़ कर वर्तमान में स्त्री अस्मिता को भारतीय परिवेश में पुर्नस्थापित करने का सफल प्रयास किया है।

संदर्भ सूची

1. मिश्र रवीन्द्रनाथ, *मृदुला सिन्हा का साहित्यः विवेचन और विश्लेषण,* मेधा पब्लिशिंग हाऊस, पृ. संख्या 10.
2. सिन्हा मृदुला, *अतिशय उपन्यास (भूमिका),* प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, संस्करण 2016.
3. मिश्र रवीन्द्रनाथ, *मृदुला सिन्हा का साहित्यः विवेचन और विश्लेषण,* मेधा पब्लिशिंग हाऊस, पृ. संख्या 91.
4. सिन्हा मृदुला, *अतिशय,* प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृ.सं.20.
5. सिन्हा मृदुला, *ज्यों मेहँदी को रंग,* प्रभात प्रकाशन,पृ.सं. 41.
6. पंचोली बद्री प्रसाद, *विवरणिका,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, जुलाई–अगस्त, 2015.
7. सिन्हा मृदुला, *अतिशय,* प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृ.सं 226.
8. वही पृ.सं. 238.
9. सिन्हा मृदुला, विजयिनी, सामयिक प्रकाशन, 2013,पृ.सं. 10.
10. सिन्हा मृदुला, *अतिशय,* प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृ.सं 55,85.
11. शर्मा अखिलेश कुमार, पी–एच. डी. शोध प्रबंध, पृ.सं. 225.
12. तालदी बनजा, *हिन्दी महिला कहानी लेखन स्त्री जीवन के विविध आयाम,* विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2021, पृ.सं.16.
13. सिन्हा मृदुला, *अतिशय,* प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृ.सं 236.
14. सिन्हा मृदुला, *ज्यों मेहँदी को रंग,* प्रभात प्रकाशन,पृ.सं. 105.
15. सिन्हा मृदुला, *विजयिनी,* सामयिक प्रकाशन, 2013, पृ.सं. 10.

****